अध्याय 8

छत्तीसगढ़ अध्ययन

PT6QTX

भारत के हृदय में स्थित मध्यप्रदेश से लगा हुआ दक्षिण–पूर्व का भू–भाग छत्तीसगढ़ कहलाता है। प्राचीन काल के दक्षिण कोसल, महाकान्तार, दण्डकारण्य, महाकोसल, मेकल आदि नाम के क्षेत्र इसमें मिले हुए हैं। गढ़ों के आधार पर कल्चुरि काल के राजाओं के समय इसका नाम छत्तीसगढ़ पड़ा। रतनपुर राज्य में 18 गढ़ तथा रायपुर राज्य में 18 गढ़ थे। महानदी तथा शिवनाथ नदी प्रायः इसकी सीमा रेखा थी।

आदि मानव सभ्यता के प्रारंभिक प्रमाण हमें रायगढ़ के पास सिंघनपुर, काबरा पहाड़, दुर्ग क्षेत्र का चितवाडोंगरी में मिले शैल चित्र, बालोद धमतरी मार्ग पर सोरर, मुजगहन, करकाभाट के अतिरिक्त बसना, सराईपाली के पास बरलिया गाँव में मिले शव स्थल पाषाण स्तंभ के रुप में मिलते हैं। राजिम को छत्तीसगढ का प्रयागतीर्थ कहा जाता है। पांडुका गाँव के पास सिरकट्टी में नदी बंदरगाह के अवशेष हैं। नदी जल मार्ग द्वारा महानदी से संबलपुर (हीराकुंड) तक नाव द्वारा व्यापार होता था।

सरगुजा जिले में दुनिया की एक प्राचीनतम नाट्यशाला है। कहा जाता है कि महाकवि कालिदास ने यहाँ पर मेघदूत काव्य की रचना की थी। जनश्रुति के अनुसार दंडकारण्य (बस्तर) में भगवान राम का आगमन हुआ था। छत्तीसगढ़ के रामगिरी, सीताबेंगरा, भीमखोज आदि स्थान रामायण एवं महाभारत काल से संबंधित हैं।

इतिहास के हर काल में छत्तीसगढ़ का महत्व है। आदिमानव काल, वैदिक काल, रामायण–महाभारत काल, महाजनपद काल, मौर्य, शुंग, सातवाहन, वाकाटक, गुप्तकाल, शरभपुरीय, सोमवंश, पांडुवंश, नल, नागवंश, कल्चुरिकाल, मराठाकाल तथा अँग्रेजों के शासन काल में हुई घटनाओं से यह प्रभावित रहा है।

बिलासपुर क्षेत्र के मल्हार गाँव में प्राप्त प्राचीन मूर्तियों और पुरावशेष, ताला गाँव की सुप्रसिद्ध रुद्रशिव प्रतिमा, सिरपुर में ईंट से बना हुआ लक्ष्मण मंदिर, राजिम में राजीवलोचन का मंदिर, रतनपुर, रायपुर, अम्बिकापुर में महामाया देवी का मंदिर, दंतेवाड़ा में दंतेश्वरी मंदिर, भोरमदेव का शिवमंदिर, बारसूर बस्तर का गणेश मंदिर प्रसिद्ध हैं। मल्हार, सिरपुर, आरंग, राजिम, रतनपुर में जैन धर्म, बौद्ध धर्म से सम्बन्धित प्राचीन अवशेष मिले हैं। पाली, जांजगीर, खरौद, नगरी सिहावा, बस्तर, डोंगरगढ़, खैरागढ़, सारंगढ़, सिरी– पचराही, देवबलौदा, गंडई, चंपारन, रायपुर, दुर्ग, धमतरी आदि ऐतिहासिक स्थान भी महत्वपूर्ण हैं।

छत्तीसगढ़ में कल्चुरि या हैहयवंशी राजाओं ने लगभग दसवीं शताब्दी के अंत से अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक शासन किया। बाद में यहाँ सन् 1741 ई. में मराठों का प्रभाव बढ़ा।

नागपुर के भोंसले परिवार के राजकुमार बिंबाजी भोंसले ने रतनपुर से छत्तीसगढ़ का

प्रशासन चलाया। बाद में सूबेदारी शासन हुआ। फिर अँग्रेजों के द्वारा हस्तक्षेप किया गया। तदन्तर राजा रघु जी तृतीय की मृत्यु के बाद यहाँ अँग्रेजी राज शुरु हो गया। छत्तीसगढ़ में अँग्रेजी प्रशासन 1854 से 1947 ई. तक चला। यहाँ पर 14 सामंती राज्य एवं अनेक जमींदारियाँ भी थीं।

छत्तीसगढ़ के समाज में कबीर पंथ एवं सतनाम पंथ की विचारधाराओं का व्यापक प्रभाव पड़ा। गुरु घासीदास युग प्रवर्तक थे। 19वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में इस अंचल में उन्होंने सामाजिक जागृति की।

अँग्रेजों के अत्याचार एवं अन्याय का विरोध सोनाखान के जमींदार वीर नारायण सिंह ने किया। वे छत्तीसगढ़ में सन् 1857 ई. की क्रांति के नेता थे। अँग्रेजों ने 10 दिसम्बर 1857 ई. को रायपुर में सैनिकों और जनता की उपस्थिति में उन्हें फाँसी दे दी। 18 जनवरी 1858 ई. को रायपुर फौजी छावनी में हनुमान सिंह राजपूत के नेतृत्व में क्रांति हुई, जिसमें एक अँग्रेज अधिकारी सिडवेल मारा गया। अँग्रेजों ने जिन क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर 22 जनवरी 1858 ई. को फाँसी दी, उन शहीदों के नाम हैं – गाजी खाँ, अब्दुल हक, मुल्लू, शिवनारायण, पन्ना लाल, मातादीन, ठाकुर सिंह, अकबर हुसैन, बल्ली दुबे, लल्ला सिंह, बुद्धू, परमानंद, शोभाराम, दुर्गाप्रसाद, नजर मुहम्मद, शिव गोविंद एवं देवीदीन। इन शहीदों को कभी नहीं भुलाया जा सकता, जिनके त्याग एवं बलिदान ने जनता में जागृति उत्पन्न की। क्रांतिकारी नेता हनुमान सिंह राजपूत अंत तक गिरफ्तार नहीं किये जा सके।

छत्तीसगढ़ के साहित्य साधकों में पं. गोपाल मिश्र, पं. माखन मिश्र, कवि खांडेराव, बाबू रेवाराम कायस्थ, पं. शिवदत्त शास्त्री गौराहा, पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी, महामहोपाध्याय हीरालाल, राजा कमलनारायण सिंह, पं. माधवराव सप्रे, पं. सुन्दरलाल शर्मा, पं. लोचन प्रसाद पांडेय, पं. मुकुटधर पांडेय, बाबू प्यारेलाल गुप्त, पं. बाल शास्त्री झा, पं. केदारनाथ ठाकुर, पं. रामदयाल तिवारी, मौलाना अब्दुल रऊफ, मावली प्रसाद श्रीवास्तव, पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी बिप्र, आदि प्रमुख हैं। इन्होंने यहाँ के साहित्यिक एवं साँस्कृतिक विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया।

छत्तीसगढ़ में राजनीतिक एवं साहित्यिक चेतना जगाने में पं. रविशंकर शुक्ल, वामनराव लाखे, पं. नारायण राव मेघावाले, ठाकुर प्यारेलाल सिंह, बैरिस्टर छेदी लाल, पं. रत्नाकर झा, डॉ. खूबचंद बघेल, श्रीमती मिनी माता, पं. उमेश दत्त पाठक, पं. विद्यार्थी ठाकुर, पं. ध्रुवनाथ ठाकुर, घनश्याम सिंह गुप्त, पं. ज्वाला प्रसाद मिश्र, बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव, पं. सुंदर लाल त्रिपाठी, डॉ. राधा बाई एवं श्रीमती दयाबाई का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

पं. सुंदरलाल शर्मा, ठाकुर प्यारेलाल सिंह एवं खूबचंद बघेल ने समाज के पिछड़े वर्ग, किसानों तथा मजदूरों के हित में महत्वपूर्ण कार्य किया। महात्मा गाँधी ने पं. सुन्दरलाल शर्मा के समाज सुधार के कार्यों की सराहना की थी।

'भारत छोड़ो आंदोलन' के पहले छत्तीसगढ़ के युवकों के एक दल ने सशस्त्र क्रांति का प्रयास किया था। यह घटना रायपुर षड़यंत्र केस या सूरबंधु केस के रूप में जानी जाती है। इसमें परसराम सोनी, पं. देवीकांत झा, सुधीर मुखर्जी, सुरबंधु, रणवीर शास्त्री आदि युवकों ने भाग लिया।

'भारत छोड़ो आंदोलन' में ठा. रामकृष्ण सिंह, पं. कमल नारायण शर्मा, पं. रामानंद दुबे, रणवीर सिंह शास्त्री, पं. रत्नाकर झा, पं. रामगोपाल तिवारी, महंत लक्ष्मीनारायण दास, मोती लाल त्रिपाठी आदि सक्रिय थे।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का प्रभाव भी छत्तीसगढ़ पर पड़ा। बैरिस्टर छेदीलाल तथा बाजा मास्टर त्रिपुरी काँग्रेस में काफी सक्रिय रहे थे। रायपुर और दुर्ग में कलेक्टर रहे श्री रामकृष्ण पाटिल ने सरकारी नौकरी छोड़कर राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया। दुर्ग के पुलिस अधिकारी पं. लखनलाल मिश्र ने वर्दी त्यागकर राष्ट्रीय आंदोलन में समर्पित भाव से कार्य किया।

15 अगस्त 1947 की सुबह का सूरज देश की आजादी का संदेश लेकर खुशहाली के माहौल में उगा। हम विकास की ओर आगे बढ़ते रहे, हमारा छत्तीसगढ़ भी इसमें सहभागी रहा है। सर्वधर्म समभाव तथा सामाजिक समरसता की भावना यहाँ के जन–जन के मन में समाई हुई है।

छत्तीसगढ़ की संस्कृति गौरवशाली रही है। यहाँ की परम्पराएँ अद्‌भुत हैं, जो लोगों को एक दूसरे से जोड़ती हैं। महानदी की पवित्र जलधारा की तरह सर्वधर्म समभाव की भावना यहाँ के लोगों के विचारों में समाहित है।

अभ्यास प्रश्न

PTFLVK

1. केवल नाम लिखिए–

अ. सबसे अधिक वर्षों तक शासन करनेवाला राजवंश

ब. सोनाखान के जमींदार

स. सबसे प्राचीन नाट्यशाला छत्तीसगढ़ में कहाँ है ?

द. रायपुर फौजी छावनी में किसके नेतृत्व में क्रांति हुई ?

इ. किस पुलिस अधिकारी ने वर्दी त्यागकर राष्ट्रीय आंदोलन में समर्पित भाव से कार्य किया ?

2. सुमेलित कीजिए–

अ. भोंसला शासक	हनुमान सिंह
ब. क्रांतिकारी नेता	बिम्बाजी
स. साहित्यकार	गुरु घासीदास
द. समाज सुधारक	पं. गोपाल मिश्र

3. प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

अ. इस क्षेत्र को छत्तीसगढ़ क्यों कहते हैं?

ब. छत्तीसगढ़ में राजनैतिक विकास किस प्रकार हुआ?

स. छत्तीसगढ़ के किसी एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के बारे में चित्र सहित जानकारी एकत्र कर लिखिए तथा जानकारी के स्त्रोत भी बताइये ?